Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 16/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -

मनोगतिकी मॉडल **(PSYCHODYNAMIC MODEL)**

परिचय (Introduction)

असामान्य व्यवहार की व्याख्या से सम्बन्धित इस मॉडल का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड द्वारा किया गया था, जिसे बाद में कई मनोवैज्ञानिकों ने अपने स्तर से संशोधित किया। फ्रायड के इस मौलिक मॉडल को मनोविश्लेषणात्मक मॉडल एवं इसके इस संशोधित मॉडल को मनोगतिकी मॉडल कहते है। फ्रायड महोदय ने मानसिक रोगियों के करीब 50 वर्षों तक किए गए प्रेक्षण एवं उपचार से प्राप्त अनुभवों के आधार पर असामान्य व्यवहार की व्याख्या अचेतन के आंतरिक गतिकी के रूप में किया। इस मनोविश्लेषणात्मक मॉडल को कई मनोवैज्ञानिकों ने बाद में संशोधित कर उसे और उन्नत बनाया। मनोगतिकी मॉडल के अनुसार व्यक्ति के असामान्य व्यवहार का कारण प्रतिबल / तनाव (Stress) होता है। लेकिन यह प्रतिबल क्यों तथा कैसे उत्पन्न होता है, इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिको में मतभेद है। अतः इसी मतभेद को ध्यान में रखते हुए इस उपागम को हम दो भागों में बांटकर अध्ययन करेगे।

मनोविश्लेषणात्मक मॉडल (Psychoanalytic Model)

नव फ्रायडवादी मॉडल / नव मनोगतिकी संदर्भ (Neo Freudian Model or Neo Psychodynamic Perspective)

इन दोनों का वर्णन इस प्रकार हैं-

मनोविश्लेषणात्मक मॉडल (Psychoanalytic Model)

मनोविश्लेषणात्मक मॉडल सिगमण्ड फ्रायड (1856 1939) द्वारा प्रतिपादित मौलिक तथा क्लासिकी सिद्धान्त है। इन्होंने लगभग 40 वर्षों के अपने नैदानिक अनुभवों के बाद जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, उसे मनोवैश्लेषिक सिद्धान्त या मनोदैहिक सिद्धान्त कहा जाता है। इन्होंने ये सिद्धान्त 1927 में दिया था। फ्रायड को मानसिक रोगियों के प्रेक्षण (Observation) तथा उपचार का गहन अनुभव था और वे अपने इस अनुभव के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि रोगी व्यक्ति की अधिक मजबूत एवं महत्त्वपूर्ण मानसिक प्रक्रियाएँ चेतन मन में न होकर अचेतन मन में होती है और मनुष्य का व्यवहार उसके चेतन से अधिक अचेतन पर निर्भर करता है।

चेतन मन के मानसिक प्रक्रियाओं से तो व्यक्ति पूर्णतः अवगत रहता है, लेकिन अचेतन की मानसिक प्रक्रियाओं से बिल्कुल अंजान होता है। यहाँ पर अचेतन से फ्रॉयड का तात्पर्य मनुष्य की अनेक अतृप्त भावनाओं के संचय से है। फ्रॉयड ने यह बताया कि मनुष्य की अतृप्त इच्छाएँ अनजाने में उसके अचेतन में एकत्रित हो जाती हैं, जो आगे चलकर उसके व्यवहार को प्रभावित करने का कारण बनती हैं। इन दोनों के मध्य भी एक और अन्य तरह की

मानसिक प्रक्रिया होती है, जिसे अर्द्धचेतन कहा जाता है। अर्द्धचेतन की मानसिक प्रक्रियाओं को व्यक्ति प्रयास करके चेतन में ला पाता है।